Colossians

1 Greetings from Paul, an apostle of Christ
Jesus. I am an apostle because that is what God
wanted. Greetings also from Timothy, our brother
in Christ.

2 To the holy and faithful brothers and sisters
in Christ who live in Colossae.

Grace and peace to you from God our Father.

3 In our prayers we always thank God for you.
He is the Father of our Lord Jesus Christ. 4 We
thank him because we have heard about the faith
you have in Christ Jesus and the love you have for
all of God's people. 5 Your faith and love continue
because you know what is waiting for you in
heaven—the hope you have had since you first
heard the true message, the Good News 6 that was
told to you. Throughout the world, this Good News
is bringing blessings and is spreading. And that's
what has been happening among you since the
first time you heard it and understood the truth
about God's grace. 7 You heard it from Epaphras,
our dear friend and co-worker. He is a faithful
servant of Christ for us. 8 He also told us about the
love you have from the Spirit.

9 Since the day we heard these things about
you, we have continued praying for you. This is
what we pray:

that God will make you completely
sure of what he wants by giving
you all the wisdom and spiritual
understanding you need;
10 that this will help you live in a way
that brings honor to the Lord and
pleases him in every way;
that your life will produce good works
of every kind and that you will
grow in your knowledge of God;
11 that God will strengthen you with his
own great power, so that you will be
patient and not give up when troubles come.

कुलुस्सियों

1 पौलुस जो परमेश्वर की इच्छानुसार यीशु मसीह
का प्रेरित है उसकी, तथा हमारे भाई तिमुथियुस
की ओर से।

2 मसीह में स्थित कुलुस्से में रहने वाले विश्वासी
भाइयों और सन्तों के नाम:

हमारे परम पिता परमेश्वर की ओर से तुम्हें
अनुग्रह और शांति मिले।

3 जब हम तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हैं, सदा ही
अपने प्रभु यीशु मसीह के परम पिता परमेश्वर का
धन्यवाद करते हैं। 4 क्योंकि हमने मसीह यीशु में
तुम्हारे विश्वास तथा सभी संत जनों के प्रति तुम्हारे
प्रेम के बारे में सुना है। 5 यह उस आशा के कारण
हुआ है जो तुम्हारे लिये स्वर्ग में सुरक्षित है और
जिस के विषय में तुम पहले ही सच्चे संदेश अर्थात्
सुसमाचार के द्वारा सुन चुके हो। 6 सुसमाचार समूचे
संसार में सफलता पा रहा है। यह वैसे ही सफल
हो रहा है जैसे तुम्हारे बीच यह उस समय से ही
सफल होने लगा था जब तुमने परमेश्वर के अनुग्रह
के बारे में सुना था और सचमुच उसे समझा था।
7 हमारे प्रिय साथी दास इपफ्रास से, जो हमारे लिये
मसीह का विश्वासी सेवक है, तुमने सुसमाचार
की शिक्षा पायी थी। 8 आत्मा के द्वारा उत्तेजित
तुम्हारे प्रेम के विषय में उसने भी हमें बताया है।

9 इसलिए जिस दिन से हमने इसके बारे में सुना
है, हमने भी तुम्हारे लिये प्रार्थना करना और यह
विनती करना नहीं छोड़ा है:

प्रभु का ज्ञान सब प्रकार की
समझ-बूझ जो आत्मा देता,
तुम्हे प्राप्त हो।
और तुम बुद्धि भी प्राप्त करो,
10 ताकि वैसे जी सको, जैसे प्रभु को साजे।
हर प्रकार से तुम प्रभु को सदा प्रसन्न करो।
तुम्हारे सब सत्कर्म सतत सफलता पावें,
तुम्हारे जीवन से सत्कर्मो के फल लगें
तुम प्रभु परमेश्वर के ज्ञान में
निरन्तर बढ़ते रहो।
11 वह तुम्हें अपनी महिमापूर्ण शक्ति से सुदृढ़
बनाता जाये ताकि विपत्ति के काल खुशी
से महाधैर्य से तुम सब सह लो।

Then you will be happy [12] and give thanks to the Father. He has made you able to have what he has promised to give all his holy people, who live in the light. [13] God made us free from the power of darkness. And he brought us into the kingdom of his dear Son. [14] The Son paid the price to make us free. In him we have forgiveness of our sins.

[12]उस परम पिता का धन्यवाद करो, जिसने तुम्हें इस योग्य बनाया कि परमेश्वर के उन संत जनों के साथ जो ज्योंतिर्मय जीवन जीते हैं, तुम उत्तराधिकार पाने में सहभागी बन सके। [13]परमेश्वर ने अन्धकार की शक्ति से हमारा उद्धार किया और अपने प्रिय पुत्र के राज्य में हमारा प्रवेश कराया। [14]उस पुत्र द्वारा ही हमें छुटकारा मिला है यानी हमें मिली है हमारे पापों की क्षमा।

The Son of God Is the Same as God

[15] No one can see God,
but the Son is exactly like God.
He rules over everything that has
been made.
[16] Through his power all things
were made:
things in heaven and on earth,
seen and not seen—
all spiritual rulers, lords, powers,
and authorities.
Everything was made through him
and for him.

[17] The Son was there before
anything was made.
And all things continue because of him.
[18] He is the head of the body,
which is the church.
He is the beginning of everything else.
And he is the first among all who
will be raised from death.
So in everything he is most important.

[19] God was pleased for all of himself
to live in the Son.
[20] And through him, God was happy
to bring all things back
to himself again—
things on earth and things in heaven.
God made peace by using the blood
sacrifice of his Son on the cross.

[21] At one time you were separated from God. You were his enemies in your minds, because the evil you did was against him. [22] But now he has

मसीह के दर्शन में, परमेश्वर के दर्शन

[15] वह अदृश्य परमेश्वर का
दृश्य रूप है।
वह सारी सृष्टि का
सिरमौर है।
[16] क्योंकि जो कुछ स्वर्ग में है
और धरती पर है,
उसी की शक्ति से उत्पन्न हुआ है।
कुछ भी चाहे दृश्यमान हो और चाहे अदृश्य,
चाहे सिंहासन हो चाहे राज्य,
चाहे कोई शासक हो और चाहे अधिकारी,
सब कुछ उसी के द्वारा रचा गया है
और उसी के लिए रचा गया है।

[17] सबसे पहले उसी का अस्तित्व था,
उसी की शक्ति से सब
वस्तुएँ बनी रहती हैं।
[18] इस देह, अर्थात् कलीसिया का
सिर वही है।
वही आदि है और मरे हुओं को
फिर से जी उठाने का सर्वोच्च
अधिकारी भी वही है ताकि
हर बात में पहला स्थान उसी को मिले।

[19] क्योंकि अपनी समग्रता के साथ
परमेश्वर ने उसी में वास करना चाहा।
[20] उसी के द्वारा समूचे ब्रह्माण्ड को
परमेश्वर ने अपने से पुन:
संयुक्त करना चाहा उन सभी को
जो धरती के हैं और स्वर्ग के हैं।
उसी लहू के द्वारा परमेश्वर ने मिलाप
कराया जिसे मसीह ने क्रूस पर बहाया था।

[21]एक समय था जब तुम अपने विचारों और बुरे कामों के कारण परमेश्वर के लिये अनजाने और उसके विरोधी थे। [22]किन्तु अब जब मसीह

made you his friends again. He did this by the death Christ suffered while he was in his body. He did it so that he could present you to himself as people who are holy, blameless, and without anything that would make you guilty before him. [23] And that is what will happen if you continue to believe in the Good News you heard. You must remain strong and sure in your faith. You must not let anything cause you to give up the hope that became yours when you heard the Good News. That same Good News has been told to everyone on earth, and that's the work that I, Paul, was given to do.

Paul's Work for the Church

[24] I am happy in my sufferings for you. There is much that Christ must still suffer. And I gladly accept my part of those sufferings in my body for the good of his body, the church. [25] I became a servant of the church because God gave me a special work to do. This work helps you. My work is to tell the complete message of God. [26] This message is the secret truth that was hidden since the beginning of time. It was hidden from everyone for ages, but now it has been made known to God's holy people. [27] God decided to let his people know just how rich and glorious that truth is. That secret truth, which is for all people, is that Christ lives in you, his people. He is our hope for glory. [28] So we continue to tell people about Christ. We use all wisdom to counsel every person and teach every person. We are trying to bring everyone before God as people who have grown to be spiritually mature in Christ. [29] To do this, I work and struggle using the great strength that Christ gives me. That strength is working in my life.

2 I want you to know that I am trying very hard to help you. And I am trying to help those in Laodicea and others who have never seen me. [2] I want them to be strengthened and joined together with love and to have the full confidence that comes from understanding. I want them to know completely the secret truth that God has made

अपनी भौतिक देह में था, तब मसीह की मृत्यु के द्वारा परमेश्वर ने तुम्हें स्वयं अपने आप से ले लिया, ताकि तुम्हें अपने सम्मुख पवित्र, निश्कलंक और निर्दोष बना कर प्रस्तुत किया जाये। [23]यह तभी हो सकता है जब तुम अपने विश्वास में स्थिरता के साथ अटल बने रहो और सुसमाचार के द्वारा दी गयी उस आशा का परित्याग न करो, जिसे तुमने सुना है। इस आकाश के नीचे हर किसी प्राणी को उसका उपदेश दिया गया है, और मैं पौलुस उसी का सेवक बना हूँ।

कलीसिया के लिये पौलुस का कार्य

[24]अब देखो, मैं तुम्हारे लिये जो कष्ट उठाता हूँ, उनमें आनन्द का अनुभव करता हूँ और मसीह की देह, अर्थात् कलीसिया के लिये मसीह की यातनाओं में जो कुछ कमी रह गयी थी, उसे अपने शरीर में पूरा करता हूँ। [25]परमेश्वर ने तुम्हारे लाभ के लिये मुझे जो आदेश दिया था, उसी के अनुसार मैं उसका एक सेवक ठहराया गया हूँ। ताकि मैं परमेश्वर के समाचार का पूरी तरह प्रचार करूँ। [26]यह संदेश रहस्यपूर्ण सत्य है। जो आदिकाल से सभी की आँखों से ओझल था। किन्तु अब इसे परमेश्वर के द्वारा संत जनों पर प्रकट कर दिया गया है। [27]परमेश्वर अपने संत जनों को यह प्रकट कर देना चाहता था कि वह रहस्यपूर्ण सत्य कितना वैभवपूर्ण है। उसके पास यह रहस्यपूर्ण सत्य सभी के लिये है। और वह रहस्यपूर्ण सत्य यह है कि मसीह तुम्हारे भीतर ही रहता है और परमेश्वर की महिमा प्राप्त करने के लिये वही हमारी एक मात्र आशा है। [28]हमें जो ज्ञान प्राप्त है उस समूचे का उपयोग करते हुए हम हर किसी को निर्देश और शिक्षा प्रदान करते हैं ताकि हम उसे मसीह में एक परिपूर्ण व्यक्ति बनाकर परमेश्वर के आगे उपस्थित कर सकें। व्यक्ति को उसी की सीख देते हैं तथा अपनी समस्त बुद्धि से हर व्यक्ति को उसी की शिक्षा देते हैं ताकि हर व्यक्ति को मसीह में परिपूर्ण बना कर परमेश्वर के आगे उपस्थित कर सकें। [29]मैं इसी प्रयोजन से मसीह का उस शक्ति से जो मुझमें शक्तिपूर्वक कार्यरत है, संघर्ष करते हुए कठोर परिश्रम कर रहा हूँ।

2 मैं चाहता हूँ कि तुम्हें इस बात का पता चल जाये कि मैं तुम्हारे लिए, लौदीकिया के रहने वालों के लिए और उन सब के लिए जो निजी तौर पर मुझसे कभी नहीं मिले हैं, कितना कठोर परिश्रम कर रहा हूँ [2]ताकि उनके मन को प्रोत्साहन मिले और वे परस्पर प्रेम में बँध जायें। तथा विश्वास का वह सम्पूर्ण धन जो सच्चे ज्ञान से प्राप्त होता है, उन्हें मिल जाये

known. That truth is Christ himself. 3 In him all the treasures of wisdom and knowledge are kept safe.

4 I tell you this so that no one can fool you by telling you ideas that seem good, but are false. 5 Even though I am far away, my thoughts are always with you. I am happy to see your good lives and your strong faith in Christ.

Continue to Live in Christ

6 You accepted Christ Jesus as Lord, so continue to live following him. 7 You must depend on Christ only, drawing life and strength from him. Just as you were taught the truth, continue to grow stronger in your understanding of it. And never stop giving thanks to God.

8 Be sure you are not led away by the teaching of those who have nothing worth saying and only plan to deceive you. That teaching is not from Christ. It is only human tradition and comes from the powers that influence this world. 9 I say this because all of God lives in Christ fully, even in his life on earth. 10 And because you belong to Christ you are complete, having everything you need. Christ is ruler over every other power and authority.

11 In Christ you had a different kind of circumcision, one that was not done by human hands. That is, you were made free from the power of your sinful self. That is the kind of circumcision Christ does. 12 When you were baptized, you were buried with Christ, and you were raised up with him because of your faith in God's power. God's power was shown when he raised Christ from death.

13 You were spiritually dead because of your sins and because you were not free from the power of your sinful self. But God gave you new life together with Christ. He forgave all our sins. 14 Because we broke God's laws, we owed a debt—a debt that listed all the rules we failed to follow. But God forgave us of that debt. He took it away and nailed it to the cross. 15 He defeated the rulers and powers of the spiritual world. With the cross

तथा परमेश्वर का रहस्यपूर्ण सत्य उन्हें प्राप्त हो वह रहस्यपूर्ण सत्य स्वयं मसीह है। 3जिसमें विवेक और ज्ञान की सारी निधियाँ छिपी हुई हैं।

4ऐसा मैं इसलिए कह रहा हूँ कि कोई तुम्हें मीठी मीठी तर्कपूर्ण युक्तियों से धोका न दे। 5यद्यपि दैहिक रूप से मैं तुममें नहीं हूँ फिर भी आध्यात्मिक रूप से मैं तुम्हारे भीतर हूँ। मैं तुम्हारे जीवन के अनुशासन और मसीह में तुम्हारे विश्वास की दृढ़ता को देख कर प्रसन्न हूँ।

मसीह में बने रहो

6इसलिए तुमने जैसे यीशु को मसीह और प्रभु के रूप में ग्रहण किया है, तुम उसमें वैसे ही बने रहो। 7तुम्हारी जड़ें उसी में हो और तुम्हारा निर्माण उसी पर हो तथा तुम अपने विश्वास में दृढ़ता पाते रहो जैसा कि तुम्हें सिखाया गया है। परमेश्वर के प्रति अत्यधिक आभारी बनो।

8ध्यान रखो कि तुम्हें अपने उन भौतिक विचारों और खोखले प्रपंच से कोई धोका न दे जो मानवीय परम्परा से प्राप्त होते हैं, जो ब्रह्माण्ड को अनुशासित करने वाली आत्माओं की देन है, न कि मसीह की। 9क्योंकि परमेश्वर अपनी सम्पूर्णता के साथ सदैव उसी में निवास करता है। 10और उसी में स्थित होकर तुम परिपूर्ण बने हो। वह हर शासक और अधिकारी का शिरोमणि है।

11तुम्हारा ख़तना भी उसी में हुआ है। यह ख़तना मनुष्य के हाथों से सम्पन्न नहीं हुआ, बल्कि यह ख़तना जब तुम्हें तुम्हारी पापपूर्ण मानव प्रकृति के प्रभाव से छुटकारा दिला दिया गया था तब मसीह के द्वारा सम्पन्न हुआ। 12यह इसलिए हुआ कि जब तुम्हें बपतिस्मा में उसके साथ गाड़ दिया गया तो जिस परमेश्वर ने उसे मरे हुओं के बीच से जिला दिया था, उस परमेश्वर के कार्य में तुम्हारे विश्वास के कारण, उसी के साथ तुम्हें भी पुनःजीवित कर दिया गया।

13अपने पापों और अपने ख़तना रहित शरीर के कारण तुम मरे हुए थे किन्तु तुम्हें परमेश्वर ने मसीह के साथ-साथ जीवन प्रदान किया तथा हमारे सब पापों को मुक्त रूप से क्षमा कर दिया। 14परमेश्वर ने उस अभिलेख को हमारे बीच में से हटा दिया जिसमें उन विधियों का उल्लेख किया गया था जो हमारे प्रतिकूल और हमारे विरुद्ध था। उसने उसे कीलों से क्रूस पर जड़कर मिटा दिया है। 15परमेश्वर ने क्रूस के द्वारा आध्यात्मिक शासकों और अधिकारियों को साधन विहीन कर दिया और

he won the victory over them and led them away, as defeated and powerless prisoners for the whole world to see.

Don't Follow Rules That People Make

16 So don't let anyone make rules for you about eating and drinking or about Jewish customs (festivals, New Moon celebrations, or Sabbath days). 17 In the past these things were like a shadow that showed what was coming. But the new things that were coming are found in Christ. 18 Some people enjoy acting as if they are humble and love to worship angels. They always talk about the visions they have seen. Don't listen to them when they say you are wrong because you don't do these things. It is so foolish for them to feel such pride, because it is all based on their own human ideas. 19 They don't keep themselves under the control of the head. Christ is the head, and the whole body depends on him. Because of Christ all the parts of the body care for each other and help each other. So the body is made stronger and held together as God causes it to grow.

20 You died with Christ and were made free from the powers that influence this world. So why do you act as if you still belong to the world? I mean, why do you follow rules like these: 21 "Don't eat this," "Don't taste that," "Don't touch that"? 22 These rules are talking about earthly things that are gone after they are used. They are only human commands and teachings. 23 These rules may seem to be wise as part of a made-up religion in which people pretend to be humble and punish their bodies. But they don't help people stop doing the evil that the sinful self wants to do.

Your New Life in Christ

3 You were raised from death with Christ. So live for what is in heaven, where Christ is sitting at the right hand of God. 2 Think only about what is up there, not what is here on earth. 3 Your old self has died, and your new life is kept with Christ in God. 4 Yes, Christ is now your life, and when he comes again, you will share in his glory.

अपने विजय अभियान में बंदियों के रूप में अपने पीछे-पीछे चलाया।

मनुष्य की शिक्षा और उसके बनाये नियमों पर मत चलो

16इसलिए खाने पीने की वस्तुओं अथवा पर्वो, नये चाँद के पर्व, या सब्त के दिनों को लेकर कोई तुम्हारी आलोचना न करे। 17ये तो, जो बातें आने वाली है, उनकी छाया भर हैं। किन्तु इस छाया की वास्तविक काया तो मसीह की ही है। 18कोई व्यक्ति जो अपने आप को प्रताड़ित करने के कर्मो या स्वर्गदूतों की उपासना के कामों में लगा हुआ हो, उसे तुम्हें तुम्हारे प्रतिफल को पाने में बाधक नहीं बनने देना चाहिए। ऐसा व्यक्ति सदा ही उन दिव्य दर्शनों की डींग मारता रहता है जिन्हें उसने देखा है और अपने दुनियावी सोच की वजह से झूठे अभिमान से भरा रहता है। 19वह अपने आपको मसीह के अधीन नहीं रखता जो प्रमुख है जो जोड़ों और नसों से सम्बन्ध तथा समर्थित होकर सारी देह का उपकार करता है, और जिससे आध्यात्मिक विकास का अनुभव होता है। 20क्योंकि तुम मसीह के साथ मर चुके हो और तुम्हें "संसार की बुनियादी शिक्षाओं से छुटकारा दिलाया जा चुका है।" तो इस तरह का आचरण क्यों करते हो जैसे तुम इस दुनिया के हो और ऐसे नियमों का पालन करते हो जैसे 21"इसे हाथ मत लगाओ," "इसे चखो मत" या "इसे छुओ मत।" 22ये सब वस्तुएँ तो काम में आते-आते नष्ट हो जाने के लिये हैं। ऐसे आचार व्यवहारों की अधीनता स्वीकार करके तो तुम मनुष्य के बनाये आचार व्यवहारों और शिक्षाओं का ही अनुसरण कर रहे हो। 23मनमानी उपासना, अपने शरीर को प्रतारित करने और अपनी काया को कष्ट देने से सम्बन्धित ये नियम बुद्धि पर आधारित प्रतीत होते हैं पर वास्तव में इन मूल्यों का कोई नियम नहीं है। ये नियम तो वास्तव में लोगों को उनकी पापपूर्ण मानव प्रकृति में लगा डालते हैं।

मसीह में नया जीवन

3क्योंकि यदि तुम्हें मसीह के साथ मरे हुओं में से जिला कर उठाया गया है तो उन वस्तुओं के लिये प्रयत्नशील रहो जो स्वर्ग में हैं जहाँ परमेश्वर की दाहिनी ओर मसीह विराजित है। 2स्वर्ग की वस्तुओं के सम्बन्ध में ही सोचते रहो। भौतिक वस्तुओं के सम्बन्ध में मत सोचो। 3क्योंकि तुम लोगों का पुराना व्यक्तित्व मर चुका है और तुम्हारा नया जीवन मसीह के साथ साथ परमेश्वर में छिपा है। 4जब मसीह, जो

5 So put everything evil out of your life: sexual
sin, doing anything immoral, letting sinful
thoughts control you, and wanting things that are
wrong. And don't keep wanting more and more
for yourself, which is the same as worshiping a
false god. 6 God will show his anger against those
who don't obey him,* because they do these evil
things. 7 You also did these things in the past,
when you lived like them.

8 But now put these things out of your life:
anger, losing your temper, doing or saying things
to hurt others, and saying shameful things. 9 Don't
lie to each other. You have taken off those old
clothes—the person you once were and the bad
things you did then. 10 Now you are wearing a
new life, a life that is new every day. You are
growing in your understanding of the one who
made you. You are becoming more and more like
him. 11 In this new life it doesn't matter if you are
a Greek or a Jew, circumcised* or not. It doesn't
matter if you speak a different language or even if
you are a Scythian. It doesn't matter if you are a
slave or free. Christ is all that matters, and he is in
all of you.

Your New Life With Each Other

12 God has chosen you and made you his holy
people. He loves you. So your new life should be
like this: Show mercy to others. Be kind, humble,
gentle, and patient. 13 Don't be angry with each
other, but forgive each other. If you feel someone
has wronged you, forgive them. Forgive others
because the Lord forgave you. 14 Together with
these things, the most important part of your new
life is to love each other. Love is what holds
everything together in perfect unity. 15 Let the
peace that Christ gives control your thinking. It is
for peace that you were chosen to be together in
one body.* And always be thankful.

16 Let the teaching of Christ live inside you
richly. Use all wisdom to teach and counsel each

3:6 ***against … him*** Some Greek copies do not have these words.

body Christ's spiritual body, meaning the church—his people.

हमारा जीवन है, फिर से प्रकट होगा तो तुम भी उसके
साथ उसकी महिमा में प्रकट होओगे।

5इसलिए तुममें जो कुछ सांसारिक है, उसका
अंत कर दो। व्यभिचार, अपवित्रता, वासना, बुरी
इच्छाएँ और लालच जो मूर्ति उपासना का ही एक
रूप है, 6इन ही बातों के कारण परमेश्वर का क्रोध
प्रकट होने जा रहा है।* 7एक समय था जब तुम
भी ऐसे कर्म करते हुए इसी प्रकार का जीवन जीया
करते थे।

8किन्तु अब तुम्हें इन सब बातों के साथ साथ
क्रोध, झुँझलाहट, शत्रुता, निन्दा-भाव और अपशब्द
बोलने से छुटकारा पा लेना चाहिए। 9आपस में
झूठ मत बोलो क्योंकि तुमने अपने पुराने व्यक्तित्व
को उसके कर्मो सहित उतार फेंका है। 10और नये
व्यक्तित्व को धारण कर लिया है जो अपने रचयिता
के स्वरूप में स्थित होकर परमेश्वर के सम्पूर्ण ज्ञान
के निमित्त निरन्तर नया होता जा रहा है।
11परिणामस्वरूप वहाँ यूनानी यहूदी और ग़ैर यहूदी
में कोई अन्तर नहीं रह गया है, न किसी ख़तना
युक्त और ख़तना रहित में, न किसी असभ्य और
बर्बर में, न दास और एक स्वतन्त्र व्यक्ति में कोई
अन्तर है। मसीह सर्वेसर्वा है और सब विश्वासियों
में उसी का निवास है।

तुम्हारा नया जीवन एक दूसरे के लिये

12क्योंकि तुम परमेश्वर के चुने हुए पवित्र और
प्रियजन हो इसलिए सहानुभूति, दया, नम्रता, कोमलता
और धीरज को धारण करो। 13तुम्हें आपस में जब
कभी किसी से कोई कष्ट हो तो एक दूसरे की सह लो
और परस्पर एक दूसरे को मुक्त भाव से क्षमा कर दो।
तुम्हें आपस में एक दूसरे को ऐसे ही क्षमा कर देना
चाहिए जैसे परमेश्वर ने तुम्हें मुक्त भाव से क्षमा कर
दिया। 14इन बातों के अतिरिक्त प्रेम को धारण करो।
प्रेम ही सब को आपस में बाँधता और परिपूर्ण करता
है। 15तुम्हारे मन पर मसीह से प्राप्त होने वाली शांति
का शासन हो। इसी के लिये तुम्हें उसी एक देह* में
बुलाया गया है। सदा धन्यवाद करते रहो।

16अपनी सम्पन्नता के साथ मसीह का संदेश तुम
में वास करे। भजनों, स्तुतियों और आत्मा के

3:6 कुछ यूनानी प्रतियों में यह शब्द जोड़े गए हैं: "उन पर जो आज्ञा को नहीं मानते।"

देह मसीह का आत्मिक शरीर अर्थात् उसकी कलीसिया अथवा उसके लोग।

other. Sing psalms, hymns, and spiritual songs with thankfulness in your hearts to God. 17 Everything you say and everything you do should be done for Jesus your Lord. And in all you do, give thanks to God the Father through Jesus.

Your New Life at Home

18 Wives, be willing to serve your husbands. This is the right thing to do in following the Lord.

19 Husbands, love your wives, and be gentle to them.

20 Children, obey your parents in everything. This pleases the Lord.

21 Fathers, don't upset your children. If you are too hard to please, they might want to stop trying.

22 Servants, obey your masters in everything. Obey all the time, even when they can't see you. Don't just pretend to work hard so that they will treat you well. No, you must serve your masters honestly because you respect the Lord. 23 In all the work you are given, do the best you can. Work as though you are working for the Lord, not any earthly master. 24 Remember that you will receive your reward from the Lord, who will give you what he promised his people. You are serving the Lord Christ. 25 Remember that anyone who does wrong will be punished for that wrong. And the Lord treats everyone the same.

4 Masters, give what is good and fair to your servants. Remember that you have a Master in heaven.

Some Things to Do

2 Never stop praying. Be ready for anything by praying and being thankful. 3 Also pray for us. Pray that God will give us an opportunity to tell people his message. I am in prison for doing this. But pray that we can continue to tell people the secret truth that God has made known about Christ. 4 Pray that I will say what is necessary to make this truth clear to everyone.

5 Be wise in the way you act with those who are not believers. Use your time in the best way

गीतों को गाते हुए बड़े विवेक के साथ एक दूसरे को शिक्षा और निर्देश देते रहो। परमेश्वर को मन ही मन धन्यवाद देते हुए गाते रहो। 17और तुम जो कुछ भी करो या कहो, वह सब प्रभु यीशु के नाम पर हो। उसी के द्वारा तुम हर समय परम पिता परमेश्वर को धन्यवाद देते रहो।

नये जीवन के नियम

18हे पत्नियों, अपने पतियों के प्रति उस प्रकार समर्पित रहो जैसे प्रभु के अनुयायियों को शोभा देता है।

19हे पतियों, अपनी पत्नियों से प्रेम करो, उनके प्रति कठोर मत बनो।

20हे बालकों, सब बातों में अपने माता-पिता की आज्ञा का पालन करो। क्योंकि प्रभु इस व्यवहार से प्रसन्न होता है।

21हे पिताओ, अपने बालकों को कड़ुवाहट से मत भरो। कहीं ऐसा न हो कि वे जतन करना ही छोड़ दें।

22हे सेवको, अपने सांसारिक स्वामियों की सब बातों का पालन करो। केवल लोगों को प्रसन्न भर करने के लिये उसी समय नहीं जब वे देख रहे हों, बल्कि सच्चे मन से उनकी मानो। क्योंकि तुम प्रभु का आदर करते हो। 23तुम जो कुछ करो अपने समूचे मन से करो। मानों तुम उसे लोगों के लिये नहीं बल्कि प्रभु के लिये कर रहे हो। 24याद रखो कि तुम्हें प्रभु से उत्तराधिकार का प्रतिफल प्राप्त होगा। अपने स्वामी मसीह की सेवा करते रहो 25क्योंकि जो बुरा कर्म करेगा, उसे उसका फल मिलेगा और वहाँ कोई पक्षपात नहीं है।

4हे स्वामियों, तुम अपने सेवकों को जो उनका बनता है और उचित है, दो। याद रखो स्वर्ग में तुम्हारा भी कोई स्वामी है।

पौलुस की मसीहियों के लिये सलाह

2प्रार्थना में सदा लगे रहो। और जब तुम प्रार्थना करो तो सदा परमेश्वर का धन्यवाद करते रहो। 3साथ ही साथ हमारे लिये भी प्रार्थना करो कि परमेश्वर हमें अपने संदेश के प्रचार का तथा मसीह से सम्बन्धित रहस्यपूर्ण सत्य के प्रवचन का अवसर प्रदान करे क्योंकि इसके कारण ही मैं बन्दीगृह में हूँ। 4प्रार्थना करो कि मैं इसे ऐसे स्पष्टता के साथ बता सकूँ जैसे मुझे बताना चाहिए।

5बाहर के लोगों के साथ विवेकपूर्ण व्यवहार करो। हर अवसर का पूरा-पूरा उपयोग करो।

you can. 6 When you talk, you should always be kind and wise. Then you will be able to answer everyone in the way you should.

News About Those With Paul

7 Tychicus is my dear brother in Christ. He is a faithful helper and he serves the Lord with me. He will tell you everything that is happening with me. 8 That is why I am sending him. I want you to know how we are, and I am sending him to encourage you. 9 I am sending him with Onesimus, the faithful and dear brother from your group. They will tell you everything that has happened here.

10 Aristarchus, the one here in prison with me, sends you his greetings. Mark, the cousin of Barnabas, also sends his greetings. (I have already told you what to do about Mark. If he comes, welcome him.) 11 And greetings from Jesus, the one who is also called Justus. These are the only Jewish believers who work with me for God's kingdom. They have been a great comfort to me.

12 Epaphras, another servant of Jesus Christ from your group, sends his greetings. He constantly struggles for you in prayer. He prays that you will grow to be spiritually mature and have everything that God wants for you. 13 I know that he has worked hard for you and the people in Laodicea and in Hierapolis. 14 Greetings also from Demas and our dear friend Luke, the doctor.

15 Give our greetings to the brothers and sisters in Laodicea. Greetings also to Nympha and to the church that meets in her house. 16 After this letter is read to you, be sure it is also read to the church in Laodicea. And you read the letter that I wrote to them. 17 Tell Archippus, "Be sure to do the work the Lord gave you."

18 Here's my greeting in my own handwriting—Paul. Remember me in prison. God's grace be with you.

6तुम्हारी बोली सदा मीठी रहे और उससे बुद्धि की छटा बिखरे ताकि तुम जान लो कि किस व्यक्ति को कैसे उत्तर देना है।

पौलुस के साथियों के समाचार

7हमारा प्रिय बन्धु तुखिकुस जो एक विश्वासी सेवक और प्रभु में स्थित साथी दास है, तुम्हें मेरे सभी समाचार बता देगा। 8मैं उसे तुम्हारे पास इसलिए भेज रहा हूँ कि तुम्हें उससे हमारे हालचाल का पता चल जाये वह तुम्हारे हृदयों को प्रोत्साहित करेगा। 9मैं अपने विश्वासी तथा प्रिय बन्धु उनेसिमुस को भी उसके साथ भेज रहा हूँ जो तुम्हीं में से एक है। वे, यहाँ जो कुछ घट रहा है, उसे तुम्हें बतायेंगे।

10अरिस्तरखुस का जो बन्दीगृह में मेरे साथ रहा है तथा बरनाबास के बन्धु मरकुस का तुम्हें नमस्कार, (उसके विषय में तुम निर्देश पा ही चुके हो कि यदि वह तुम्हारे पास आये तो उसका स्वागत करना), 11यूसतुस कहलाने वाले यीशु का भी तुम्हें नमस्कार पहुँचे। यहूदी विश्वासियों में बस ये ही परमेश्वर के राज्य के लिये मेरे साथ काम कर रहे हैं। ये मेरे लिये आनन्द का कारण रहे हैं।

12इपफ्रास का भी तुम्हें नमस्कार पहुँचे। वह तुम्हीं में से एक है और मसीह यीशु का सेवक है। वह सदा बड़ी वेदना के साथ तुम्हारे लिये लगनपूर्वक प्रार्थना करता रहता है कि तुम आध्यात्मिक रूप से सम्पूर्ण बनने के लिये विकास करते रहो। तथा विश्वासपूर्वक परमेश्वर की इच्छा के अनुकूल बने रहो। 13मैं इसका साक्षी हूँ कि वह तुम्हारे लिये और लौदीकिया तथा हियरापुलिस के रहने वालों के लिये सदा कड़ा परिश्रम करता रहा है। 14प्रिय चिकित्सक लूका तथा देमास तुम्हें नमस्कार भेजते हैं।

15लौदीकिया में रहने वाले भाईयों को तथा नमुफास और उस कलीसिया को जो उसके घर में जुड़ती है, नमस्कार पहुँचे। 16और देखो, पत्र जब तुम्हारे सम्मुख पढ़ा जा चुके, तब इस बात का निश्चय कर लेना कि इसे लौदीकिया की कलीसिया में भी पढ़वा दिया जाये। और लौदीकिया से मेरा जो पत्र तुम्हें मिले, उसे तुम भी पढ़ लेना। 17अखिप्पुस से कहना कि वह इस बात का ध्यान रखे कि प्रभु में जो सेवा उसे सौंपी गयी है, वह उसे निश्चय के साथ पूरा करे।

18मैं पौलुस स्वयं अपनी लेखनी से यह नमस्कार लिख रहा हूँ। याद रखना मैं कारागार में हूँ, परमेश्वर का अनुग्रह तुम्हारे साथ रहे।